हरिभूमि प्रदेश की नृत्य परम्पराएँ

डॉ. शुचि गुप्ता
एसिस्टेंट प्रोफेसर, के.एल.पी. कॉलेज,
रेवाड़ी (हरियाणा)

कृषि प्रधान राज्य हरियाणा की संस्कृति में सर्वत्र सरला एवं सुलभता के दर्शन होते है। इतनी ही सहजता आत्मासात किए यहाँ के वातावरण में सदैव लोक संगीत की ध्वनियाँ गुंजायमान रहती है। इस प्रदेश में जनसाधारण की दिनचर्या पशुधन से शुरू होकर कृषि कार्यो पर समाप्त होती है। खेतीहर किसान कठोर श्रम की बोझिलता मिटाने हेतू लोक गीतो, लोक नृत्यों का आश्रय पाते है। यही कारण है कि उनकी अभिव्यक्ति का विषय भी खेत खलिहान, ऋतुएं मुख्यत: दैनिक तीज त्यौहार क्रियाकलाप आदि होते है। जिस प्रकार दूर्वा घास मिट्टी से सम्पर्क स्थापित कर अपनी जड़े मजबूती से फैलाती चली जाती है ठीक उसी प्रकार लोक संगीत एवं नृत्य की ध्वनियाँ यहाँ के वातावरण में सदैव गुजांयमान रहती है। "हरियाणा प्रदेश में तीज त्यौहारों पर तो यहाँ के लोक जीवन संस्कृति का यौवन और भी निस्वर कर उमड़ पड़ता है। सावन के झूलों पर मुखरिये–मल्हार तो मनमोहक होती है विलोल–क्रिडाओं से आपलिवित फागुन के हुड़दंग का राग–रंग भी जीवन्तता का अक्षय–आगरा जान पड़ता है। तीज त्यौहारों के अतिरिक्त प्रमुख संस्कारों के अवसर पर भी स्त्रियों के नृत्य दर्शनीय होते है।"1 हरियाणा की पवित्र भूमि महाभारत के वेद व्यास की रचना स्थली, अंत:सलिला सरस्वती की क्रीडा स्थली, गीता के ज्ञान ध्यान को स्वयं में समेटे हुए युगो–युगो से अपनी सहजता सरलता के लिए विश्वभर में मानी जाती है।

देसा म्ह देस हरियाणा।
जित दूध दही का खाणा।।
सौंची कहना सुखी रहना।

जैसे जीवन दर्शन को समेटे हुए यहाँ को जनमानस खड़ी बोली, सादा वेशभूषा व निच्छल मुस्कान के साथ लोसंगीत से खासा जुडाव रखते है। इस विषय के संदर्भ में के.सी. शर्मा जी लिखते है "हरियाणा प्रदेश प्राचीन इतिहास में बहुधान्यक प्रदेश के नाम से विख्यात है भारतीय संस्कृति, जीवन दर्शन, कला–काव्य, साहित्य तथा संगीत के क्षेत्र में यह भूमि आर्य सभ्यता के जन्मस्थान के रूप में जानी जाती रही है।"2

'हर–आणा' (शिव का घर) 'हरि–आना' (कृष्ण जी का आगमन स्थल) दोनों का अर्थ इसके पौराणिक महत्व को अभिव्यक्त करता है। भगवान श्री कृष्ण में स्वयं इस पावन भूमि पर नृत्य कर जनमानस को अपने हर्ष की अभव्यक्ति का माध्यम नृत्य कला के रूप में दिया। यही से सामाजिक धार्मिक अवसरों पर स्त्री–पुरूषो द्वारा उल्लास की अभिव्यक्ति नृत्य द्वारा करने की परम्परा को बल मिला। रास नृत्य में निहित आध्यात्मिकता सभी लोक नृत्य कलाओं का आधार है जिसे परमानन्द की अनुभूति हेतू किया जाता है। मनुष्य मन की सहज प्रवृति है कि वह प्रत्येक क्रिया में आनन्द को तलाशता है। अत: दैनिक क्रियाकलापों को करते हुए हस्त–पाद, मन–मस्तिष्क सभी अंग एकाकार होकर लोकगीतों एवं वादयों द्वारा लोक धुनो की ताल पर थिरकने लगे तो लोकनृत्यों का सृजन होता है। महात्मा गांधी जी का कथन दृष्टव्य है कि "लोकसंगीत में चराचर जगत् गाता है और नृत्य करता है।"3 भारत जैसे विशाल देश में जहाँ लोकसंस्कृति के असंख्य रंग देखने को मिलते है ऐसे में भिन्न–भिन्न प्रदेशो में पहनी जानी वाली वेषभूषा, लोक नृत्यों की पृष्ठभूमि में गाए जाने वाले लोकगीतो की भाषा और कुछ विशेष मुद्राएं इन लोकनृत्यो में भिन्नता को दर्शाती है लोकनृत्य केवलमात्र कला नही है अपितु उस प्रदेश विशेष की परम्परा का द्योतक है। कृषि प्रधान प्रदेश होने के कारण लोकनृत्य का सम्बन्ध ऋतुतओं से जुडा है। सावन, फाग, माघ वसन्त जैसी ऋतुएँ किसानो के लिए किसी देवदूत के संदेश की भांति होती है। प्रकृति सुसज्जित होकर मेहनतकश खेतिहर किसानों को आर्शीवाद देती हुई प्रतीत होती है। देसी पहनावे में स्त्री पुरूष बीजणा, दराती, गंडासा, सोट, ढफ हाथ में लिए प्रत्येक अवसर पर थिरकते हुए ईश्वर के प्रति आभार प्रकट करते है। घडा, ढोल, मृदंग, नगाडा, ताशा, डेरू, डफ, थाली, इकतारा, झाझ मंजीरे, चिमटे, बीन, पुंगी, बीन, शहनाई, अतगोणा, ढाड, डमरू, डुग्गी, बासुंरी, घुंघरू, ढक, हामोनियम जैसे सरल, सहज, वादयो की संगति नृत्यकारों की दुख, शोक व चिन्ता को हर कर परमात्मा से मिलान जैसी अनुभूति प्रदान करती है जिसमें उनका व्यक्तित्व एकाकार होती प्रतीत होता है।

डॉ. पूर्णचन्द शर्मा के अनुसार "हरियाणा का लोक जीवन कभी से लोक नृत्यों पर लट्टू रहा है। कृषि प्रधान भू–भाग के लोग अपनी हरी भरी फसलो को लहराता देखकर मस्ती से झूम उठते है विभिन्न ऋतुओं के रंग एवं ब्याह–शादियों का उल्लास इन्हे नृत्य करने का आमंत्रण देता है"4 ऐसे अवसरो पर नवयुवतियाँ जब दामण, कुर्ती, ओठनी के साथ छेल, कडे, पौहची, ठाड, हसली, फूल, नाथ, तगडीर, नाडा, बोरला, चूडी जैसे आभूषण से सुसज्जित हो जब खलिहानो में जाती है तो हरियाणा के छैल गबरू–नौजवानों का मन नृत्य करने को आतुर हो उठता है और देखते ही देखते

वातावरण नृत्यमय हो जाता है।

हरियाणवी लोकनृत्यों को दो प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है। पहले प्रकार का वर्गीकरण निम्न प्रकार कर सकता है:–

1. सामाजिक पर्व पर किए जाने वाले – संस्कार नृत्य
2. धार्मिक पर्व पर किए जाने वाले – आध्यात्मिक नृत्य
3. विशेष त्यौहारों पर किए जाने वाले – उत्सव नृत्य

दूसरे प्रकार से हरियाणवी लोक नृत्यो का वर्गीकरण इस प्रकार कर सकते है:–

1. केवल स्त्रीयों द्वारा किए जाने वाले लोकनृत्य।
2. केवल पुरूषो द्वारा किए जाने वाले लोकनृत्य।
3. प्रकीर्ण लोकनृत्य जिससे डुगडुगी एवं डंडे के संकेत पर बन्दर व भालूओ द्वारा नृत्य किया जाता है। इन वर्गीकृत नृत्यो को विशेष नामो से जाना जाता है।

इन्हें जिन नामो से जाना जाता है वह निम्न प्रकार से है:– सांग नृत्य, घूमर नृत्य, फाग नृत्य, धमाल नृत्य, चौपाइया नृत्य, खेडिया नृत्य, मंजीरा नृत्य, गूंगा नृत्य, लूर नृत्य, बीन नृत्य, दीपक नृत्य, खेड्डा नृत्य, रतवाई नृत्य, गणगौर नृत्य, तीज नृत्य, झूमर नृत्य, फाग नृत्य, सावन नृत्य, बीन नृत्य, छटी नृत्य, रास लीला नृत्य, कोरिया लोक नृत्य की शैलियो पर पडौसी राज्यों जैसे उत्तर प्रदेश, राजस्थान आदि की नृत्यशैलियों का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। तथापि भाषा, वेषभूषा आदि का भेद उन्हे एक दूसरे से अलग करता है। 'डॉ. परमार के कथनानुसार लगभग एक करोड़ की आबादी वाले हरियाणा प्रदेश की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि राजस्थान और ब्रज के संस्कारो तथा पंजाब की संस्कृति और मौजीपन से समन्वित है। लोक संगीत वह धारा है जिसमें जनमान अनावृत सभी बह जाते है।''5 विषय को आगे बढाते हुए कुछ प्रमुख लोकनृत्यो परम्पराओं का संक्षेप में विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। निम्नलिखित सभी नृत्य सामूहिक रूप से विभिन्न अवसरों पर करने की परम्परा रही है। शैलिगत भिन्न इन्हे एक दूसरो से अलग करती है।

सांग नृत्यः–

सांग नृत्य परम्परा हरियाणा संस्कृति का सटीक चित्रण करती है। सांग का अर्थ 'नित नए रूप भरने से है।' इसे हरियाणावी लोक समाज की त्रिवेणी कहे तो अतिश्योक्ति न होगी क्योंकि यह रागिनी+संगीत+नृत्य का समिश्रण है पुरूष प्रधान नृत्य है। इसे 10 से 12 जैसी सम संख्या में पुरूष धार्मिक कथाओ का चित्रण करते है। पुरूष कलाकार स्त्रियों का रूप धारण कर नृत्य करते है। यह हरियाणा की प्राचीनतम नृत्य परम्परा है। जिसका प्रयोजन प्रारंभ में केवल मनोंरजन था तदान्तर में परिवर्तन के सोपानों को पार करते हुए यह धार्मिक एवं आध्यात्मिकता से जुडता चला गया।

रासलीलाः–

धार्मिक नृत्य है। उत्तर प्रदेश राज्य की सीमाओं से लगते हरियाणा के कुछ प्रदेशो में रासलीला नृत्य किया जाता है इस नृत्य का विषय श्री कृष्ण द्वारा अहीर जाति की ग्वालिनों को रिझाने की चेष्टा करना होता था उसी परम्परा के निर्वाहन हेतू वर्तमान समय में भी युवक–युवतियाँ मिल कर वृताकार घेरे में नृत्य करते है जो कि रास कहलाता है। यहां 'रास' शब्द से तात्पर्य परमानन्द की अनुभूति से है।

कोरिया नृत्यः–

झूमर नृत्य का एक प्रकार है जो कि हरियाणा प्रान्त के मध्यवर्ती भाग में ज्यादा प्रचलित है यह एक नारी प्रधान नत्य है जिसका विषय दिनचर्या के क्रियाकलापों पर आधारित है। लोकगीत गाते हुए युवतियाँ जोडियां बना कर नृत्य करती है। कभी अलग–अलग मुद्राएं बनाती है। शादी–ब्याह के अवसर पर भी इस नृत्य को करने की परम्परा है। इसके अतिरिक्त दुल्हे के घर स्त्रियां इकट्ठी हो शादी वाली रात को पूरी रात नृत्य एवं गीत गाते हुए बारात की सुकशल वापसी की प्रार्थना करती है।

घूमरः–

घूमर नृत्य का स्वरूप धर्म पर आधारित है। यद्यपि पडोसी राज्य राजस्थान की नृत्यशैली है परन्तु दादरी, भिवानी, लुहारू आदि जिले में इसका साकार रूप दृष्टिगात होती है। हास्य व्यंग्य से भरपूर यह नृत्य पूर्वी हरियाणा में होली, गणगौर, तीज, आदि उत्सवों पर मन्दिर जाते हुए सिर पर कासें की पूजा की थाली सजाए गीत गाते हुए माँ पार्वती की आराधना करती है। गोलाकार घूमते हुए ताली बजाकर नृत्य को गति प्रदान की जाती है। इस लोकनृत्य का स्वरूप गुजरात प्रान्त के गरवे जैसा प्रतीत होता है। 'घूमर' शब्द से तात्पर्य हाथो को ऊपर उठाकर घूमना है।

फागः–

जैसा कि नाम से प्रतीत होता है ऋतु प्रधान नृत्य है। यह नृत्य मेले त्यौहारो व उत्सवो का प्रतीक है। फाग ऋतु के आगमन का सूचक 'फाग नृत्य' को माना जाता है। लहराती फसलो को देखकर किसान उल्लास से परिपूर्ण हो उठता है। पीली चुनरी ओढे प्रकृति का रूप इनके उत्साह को और अधिक बढा देता है। इन नृत्यो के प्राचीन घूमर नृत्य की झलक मिलती है सामूहिक नृत्य है। हस्त–पाद संचालन की भिन्न–भिन्न मुद्राओं से नृत्य को गति मिलती है और चरम पर जा कर समाप्त हो जाता है। एक के बाद एक लोकगीतो की आवृति होती है जिससे घण्टो नृत्य क्रिया चलती रहती है।

धमालः–

जैसा कि नाम से प्रतीत होता है कि इसका अर्थ 'धमाचौकडी' है। पुरूष प्रधान नृत्य है गुडगांवा प्रान्त की अहीर जाति के लोग फसल की कटाई से पहले अपनी मेहनत को साकार होता देखने के उल्लास में फागुन की धुंध और कोहरे से ढकी चांदनी रात में पुरूष अपने कृषि धन की सुरक्षा हेतू खलिहानो में इकट्ठे होकर 15 से 20 की संख्या में नृत्य करते है। सारणी, बीन, ढफ–ढोलक, करताल जैसे लोकवाधो की ध्वनि पर पौराणिक कथाओ को धमाल नृत्य द्वारा साकार करते है। हथो में ढफ लिए कलाकार स्वयं ही गाते है और नृत्य करते है।

गूगा नृत्यः–

पहले पीर बणिया पीर मैं

परत पलने पाईया।
दूजे पीर बनिया पीर मै
परस राम कहलाईया।।

भादो मास में गूगा (संत पीर) को अनुयायी हाथो में साज और घडी लिए गूगा का स्मरण लोकगीतो और गूगा नृत्य के माध्यम से करते है। गूगा नवमी के दिन मजार पर इकट्ठे होकर जुलुस के रूप में शहर भर में घूमते है। ढोल, मंजीरा, डेरू, चिमटा लिए पंचवीर (पंच भक्त) जुलुस की कमान संभालते है। पीछे–पीछे अनुयायी भी नृत्य करते हुए चलते है। पुरूष प्रधान नृत्य है। हिमाचल, पंजाब, राजस्थन आदि पडौसी राज्यो से भी हिन्दु मुस्लिम अनुयायी आते है।

लोर नृत्यः–

फागुन माह में रबी की फसल कटाई के अवसर पर किसान थकावट को लोर नृत्य जैसी मनोरंजक शैली के माध्यम से दूर करते है। लोर का शाब्दिक अर्थ है 'बागर प्रदेश की लडकी' यह नृत्य विधा प्रश्नोत्तर के रूप में प्रस्तुत की जाती है। स्त्री प्रधान नृत्य है। इस नृत्य का विषय दहेज, लिंगभेद, विरह आदि होते है। दो पंक्तियों में स्त्रियां आमने सामने खडी होकर अर्धवृताकार बनाकर लोर नृत्य शुरू करती है। नृत्य का कथानक खुशी के विषय पर आकर अपनी तीव्रतम् लय के साथ समाप्त होता है।

झूमर नृत्यः–

यह नृत्य पड़ौसी राज्य पंजाब की नृत्य शैली गिद्दे के अत्यन्त समीप है। इस हेतू इस हरियाणवी गिद्दा भी कहते है। नवविवाहित युवतियां ढोलक व थाली की थाप पर घेरे में नृत्य करती है। इस नृत्य विद्या का नामकरण माथे पर पहने जाने वाले आभूषण झूमर पर हुआ है। भरपूर लोकगान के साथ ताली बजाते हुए वृताकार में घूमना झूमर नृत्य की शैली है। बीच–बीच में इस क्रम को तोडते हुए दो युवतियां आगे आकर एक सा नृत्य कर वापिस अपने स्थन पर चली जाती है। बाकी सब खडे–खडे ताली बजाती है यह क्रम घण्टो चलता है।

ढफ नृत्यः–

बसन्त ऋतु में फसल कटाई से जुडा ऋतु नृत्य है। किसानो द्वारा अच्छी फसल होने के उत्साह को दर्शाता है। चौथी शताब्दी के आसपास रोहतक के कुछ ढोलकवादको ने रागिनी पर आधारित नृत्य का चलन शुरू किया तभी से ढफ नृत्य शैली प्रचार में है।

ढप बाजे मंजीरा बाजे संग,
देस म्हारो रंग रंगीला

गाते हुए मंजरे की धुन समा बांधती है। गांव का हर तबका ढफ नृत्य में भाग लेता है। स्त्री–पुरूष मिलकर यह नृत्य कटाई के कार्य की थकान मिटाने हेतू करते है।

होरीः–

बसन्त ऋतु का त्यौहार है होली पर्व पर फसल की कटाई से निवृत हो किसान धन–धान्य से भरपूर होकर होरी नृत्य को पूरे उत्साह से करते है। ढोल, झाझ, चिमटा, करताल आदि वादयो के साथ ताल मिलाते हुए अबीर गुलाल की वर्षा करते है। सारा वातावरण रंगी आभायुक्त हो जाता है। फरीदाबाद, पलवल, बहादुरगढ आदि जिलो में इसकी छटा निराली होती है। होरी नृत्य पर ब्रज की होली का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। हास परिहास से परिपूर्ण इस नृत्य में भांग का मिश्रण इसे और अधिक रोचक बना देता है।

लोक कलाए भारतीय संस्कृति का दर्पण होती है जिसके बिम्ब में प्रदेश विशेष में रहने वाले जनमानस की मनोदशाएं, सुख–दुख, हर्ष–उल्लास, विरह–शोक आदि स्पष्ट रूप से देखे जा सकते है। परिणाम स्वरूप लोक कलाओं में मानव जीवन को प्रत्येक रंग की छटा दृष्टिगत होती है। हरियाणवी लोकनृत्यों के संक्षिप्त विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि सरलता संस्कृति का मूलभूत तत्व है। दैध्नक जीवन में प्रयुक्त वस्तुओं को वादय एवं नृत्य का माध्यम बनाते हुए कार्य करते हुए मनोरंजन हेतू अन्तराल निकाल लेना फिर पुनः कठिन परिश्रम से जुड जाना यही लोक संगीत के निर्वाह की परम्परा है। प्रकृति से जुडाव हरियाणवी लोकसंगीत की विशेषता है जिस प्रकार प्रकृति मनुष्य को दैवीय प्रदत्त उपहार है उसी प्रकार लोक संगीत में नृत्य कलाएं भी उस उपहार की प्राप्ति के प्रतिदान स्वरूप जन मानस का आभार प्रदर्शन है। इस प्रकार लोक संगीत युगो–युगो तक निर्बाध गति से बहने वाली संगीत की वह त्रिवेणी है जिसमें डुबकर जनमानस सदियों तक तृप्त होते रहेंगे।

सन्दर्भ सूची :–

1. श्री राजेन्द्र, हरियाणा संस्कृति दिगदर्शन, हरियाणा के तीज त्योहार पृष्ठ–135
2. के.सी. शर्मा, हरियाणा के कवि सूर्य लखमीचन्द पृष्ठ–3
3. लोक संगीत एवंशास्त्रीय संगीत का पारस्परिक संबंध पंकज चौपड़ा आर्ट प्रोगनेसरिसर्च जनरल पृष्ठ–23.
4. डॉ. पूर्ण चन्द शर्मा, हरियाणा संवाद पत्रिका हमारे लोकन्तत्य पृष्ठ–18
5. प्रो.रूप चन्द, हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन लेख–लोक संगीत पृष्ठ–133